CBSE Test Paper 04

Ch-8 तुलसीदास

1. **निम्नलिखित काव्यांशों को ध्यानपूर्वक पढ़कर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-**

   कहेउ लखन मुनि सीलु तुम्हारा। को नहि जान बिदित संसारा।।
   माता पितहि उरिन भये नीके। गुररिन् रही सोचु बड़ जी कें।।
   सो जनु हमरेहि माथे-काढ़ा। दिन चलि गये ब्याज बड़ बाढ़ा ।।
   अब आनिअ ब्यवहरिआ बोली। तुरत देउँ मैं थैली खोली।।
   सुनि कटु वचन कुठार सुधारा। हाय हाय सब सभा पुकारा।।
   भृगुबर परसु देखाबहु मोही। बिप्र बिचारि बच नृपद्रोही ।।
   मिले न कबहुँ सुभट रन गाढ़े। द्विजदेवता घरहि के बाढ़े ।।
   अनुचित कहि सबु लोग पुकारे। रघुपति संयनहि लखनु नेवारे।।

   i. काव्यांश से अनुप्रास अलंकार का एक उदाहरण छाँटकर लिखिए।
   ii. 'रघुकुलभानु' के सौंदर्य पर टिप्पणी कीजिए।
   iii. ‘जल सम वचन कथन में क्या सौंदर्य है?
2. कौसिक किसे कहा गया है?
3. लक्ष्मण ने धनुष टूटने के किन कारणों की संभावना व्यक्त करते हुए राम को निर्दोष बताया?
4. **निम्नलिखित पंक्तियों को पढ़ कर उस आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखें-** बालकु बोलि बधौ नहि तोहि । केवल मुनि जड़ जानहि मोहि । बाल ब्रह्मचारी अति कोहि । बिस्वबिदित क्षत्रियकुल द्रोही । भुजबल भूमि भूप बिनु किन्ही बिपुल बार महिदेवन्ह दीन्ही । सहसबाहुभुज छेदनिहारा । परसु बिलोकु महीपकुमारा ।

   i. इन पंक्तियों के वक्ता कौन हैं ?
   ii. महीपकुमारा का सम्बोधन किसके लिए है, उन्हें किसकी विशेषता बताई जा रही है ?
   iii. वक्ता ने अपनी कौन सी विशेषताएँ बताई हैं ?
5. क्षत्रिय कुल के लोग किन पर अपनी वीरता का प्रदर्शन नहीं करते ?
6. लक्ष्मण ने शूर वीरों के कौन से गुण परशुराम को बताए है?

CBSE Test Paper 04

Ch-8 तुलसीदास

Answer

1. i. 'दिन चलि गये ब्याज बड़ बाढ़ा ' में अनुपास अलंकार है । ('ब' वर्ण की आवृत्ति)
   ii. श्रीराम रघुकुल के सूर्य के समान थे। वे मन, वचन एवं कर्म से परिपूर्ण थे | उनकी गरिमा को बढ़ाने के लिए उन्हें 'रघुकुलभानु' कहा गया है।
   iii. 'जल सम वचन' कथन के द्वारा श्री राम के मधुर वचनों की ओर संकेत किया गया है जो उन्होंने परशुराम के क्रोध को शांत करने के कहे थे। जिस प्रकार जल से अग्नि शांत हो जाती है, ठीक उसी प्रकार श्रीराम ने परशुराम के क्रोध को शान्त करने के लिए अपने शीतल वचन का प्रयोग किया । 'जल सम वचन' में उपमा अलंकार है।
2. परशुराम जी ने कौशिक शब्द का प्रयोग शांत, धीर- गंभीर मुनि विश्वामित्र जी के लिये किया है जो भगवान श्री राम और लक्ष्मण जी के गुरु के रूप में जाने जाते हैं जो अपने साथ राम-लक्ष्मण को सीता जी की स्वयंवर सभा में लेकर आए थे और भगवान श्री राम ने शिवधनुष तोड़ कर परशुराम जी को क्रोधित कर दिया था।
3. परशुराम के क्रोध करने पर लक्ष्मण ने धनुष के टूट जाने पर निम्नलिखित तर्क दिए:
   i. हमें तो यह असाधारण शिव धनुष साधारण धनुष की भाति लगा।
   ii. श्री राम को तो यह धनुष, नए धनुष के सामान लगा।
   iii. श्री राम ने इसे तोडा नहीं बस उनके छूते ही धनुष स्वतः टूट गया।
4. i. इन पंक्तियों के वक्ता भगवान श्री परशुराम जी हैं।
   ii. महीपकुमारा यह सम्बोधन राम और लक्ष्मण के लिए है। परशुराम जी उन्हें अपने फरसे की विशेषता बताते हुये यह कह रहे हैं कि उनके इसी फरसे ने सहसबाहु (100 भुजाओं वाला राजा) नामक राजा की भुजाओं को काटा था इसलिए उन्हें भी उनके फरसे से भयभीत होना चाहिए क्योंकि यह फरसा अत्यंत कठोर और भयंकर है।
   iii. वक्त्ता परशुराम जी ने अपनी विशेषताएँ बताते हुये कहा है कि वे बालब्रह्मचारी और अति क्रोधी हैं और समस्त संसार उन्हें क्षत्रिय कुल से द्रोह एवं विनाश करने वाले के रूप में जानता है। उन्होंने एक बार नहीं बल्कि हजारों बार अपनी भुजाओं के बल पर इस धरती को राजाओं से छीन कर ब्राह्मणों को दान में दिया है। इसलिए आप कौन होते हो जो हमें बार-बार इस प्रकार के प्रश्नों के उत्तर देकर हमें और क्रोधित कर रहे हो अगर हमें क्रोध आ गया तो इस धरती को मैं पुनः क्षत्रिय विहीन कर दूंगा।
5. राम लक्ष्मण परशुराम संवाद में गोस्वामी तुलसीदास के द्वारा रचित पदों के अनुसार क्षत्रिय कुल के लोग देवता,ब्राह्मण, भक्त और गाय पर अपनी वीरता का प्रदर्शन नहीं करते हैं क्योंकि यदि क्षत्रियों के हाथों उनका वध हो जाता है तो वे पाप के भागीदार बन जाते हैं और यदि हार जाते हैं तो अपयश को प्राप्त करते हैं। इसलिए वे उनकी रक्षा करते हैं ना कि किसी प्रकार का युद्ध।
6. राम-लक्ष्मण परशुराम संवाद के आधार पर लक्ष्मण ने शूर वीरों के गुण बताते हुए कहा कि वीर योद्धा कभी भी धैर्य को नहीं छोड़ता | वह युद्ध भूमि में अपनी वीरता का प्रदर्शन शत्रु से युद्ध करके करता है। बुद्धिमान योद्धा रणभूमि में शत्रु का वध करता है | वह कभी भी अपनी बड़ाई अपने मुख से नहीं करता और संसार के लोग ही उसकी वीरता का गुणगान करते हैं।